निरिगुणु ऐं सरिगुणु, बेई आकार अलख जा,
जंहिंखे पिरेम परितीति सां, मने तुंहिंजो मनु,
तंहिंजो करि तद्रूपु थी, बिना भेद भज़नु,
पिरीति उते परिसनु, सामी थींदुइ सुपिरीं.

सामी जी कहते हैं कि निर्गुण और सगुण ये दोनों आकार परब्रह्म/परमेश्वर के ही हैं। परमेश्वर के इन दोनों रूपों में से किसी भी रूप को तुम्हारा मन मान ले, जिस रूप का अनुभव प्रेम से करे, तुम उस रूप की भक्ति करो। अर्थात् तुम्हारी यह भक्ति द्वैत-भाव, निज-पर के भेद-भाव से रहित होनी चाहिए। तुम यह भक्ति एकरूप होकर, तद्रूप हो कर सकते हो। सच्चे प्रेम से प्रियतम परमेश्वर प्रसन्न होंगे।

परब्रह्म, परमात्मा अंतिम परम तत्त्व है। गीता में ब्रह्म की परिभाषा बताते हुए इसे 'अक्षर' ब्रह्म परमं' कहा गया है, जो कभी भी नष्ट न होने वाला तत्त्व है। इसी परम-तत्त्व को ज्ञानी जन 'ब्रह्म', योगी-जन 'परमात्मा' और भक्तजन 'भगवान' कहते हैं। परब्रह्म एक होते हुए भी उसके दो प्रमुख प्रकार है- निर्गुण और सगुण। दूसरे शब्दों में परमेश्वर के दो रूप हैं- अव्यक्त और व्यक्त, अमूर्त और मूर्त, दिखाई न देने वाला और दिखाई देने वाला। सगुण उपासना में परमात्मा के छह गुणों में से किसी एक विशेष गुण को मानकर उसकी उपासना, पूजा या स्तुति आदि की जाती है। निर्गुण-उपासना में विश्वात्मक परम-तत्त्व का ध्यान एवं चिंतन किया जाता है। निर्गुण-भक्ति में साधक के सामने कोई प्रतीक (मूर्ति आदि) न होने का कारण यह भक्ति सगुण-भक्ति की अपेक्षा कठिन होती है।

अविनाशी ब्रह्म के किसी भी रूप की भक्ति की जा सकती है। सामी साहब भी यही बात कह रहे हैं। मनुष्य को परमात्मा का जो रूप मन में अच्छा लगे, उसका जो नाम ठीक लगे, उसका जाप, भजन, स्मरण आदि कर सकता है। भक्ति के क्षेत्र में स्वतंत्रता है। परंतु किसी भी रूप की भक्ति करते समय साधक के मन में अपने आराध्य के प्रति अनन्य प्रेम-भाव, निष्ठा एवं एकाग्रता होनी चाहिए। परमेश्वर सच्चे प्रेम, सच्ची भक्ति या स्मरण से ही प्रसन्न होते हैं। सच्चे भक्त/प्रेमी एकाग्र चित्त से परमात्मा का नाम स्मरण करते हैं।

जो जन प्रेमी राम के, तिन की गति है येह।
देह से उद्यम करे, सुमिरन करे विदेह।।

■